चौमासा

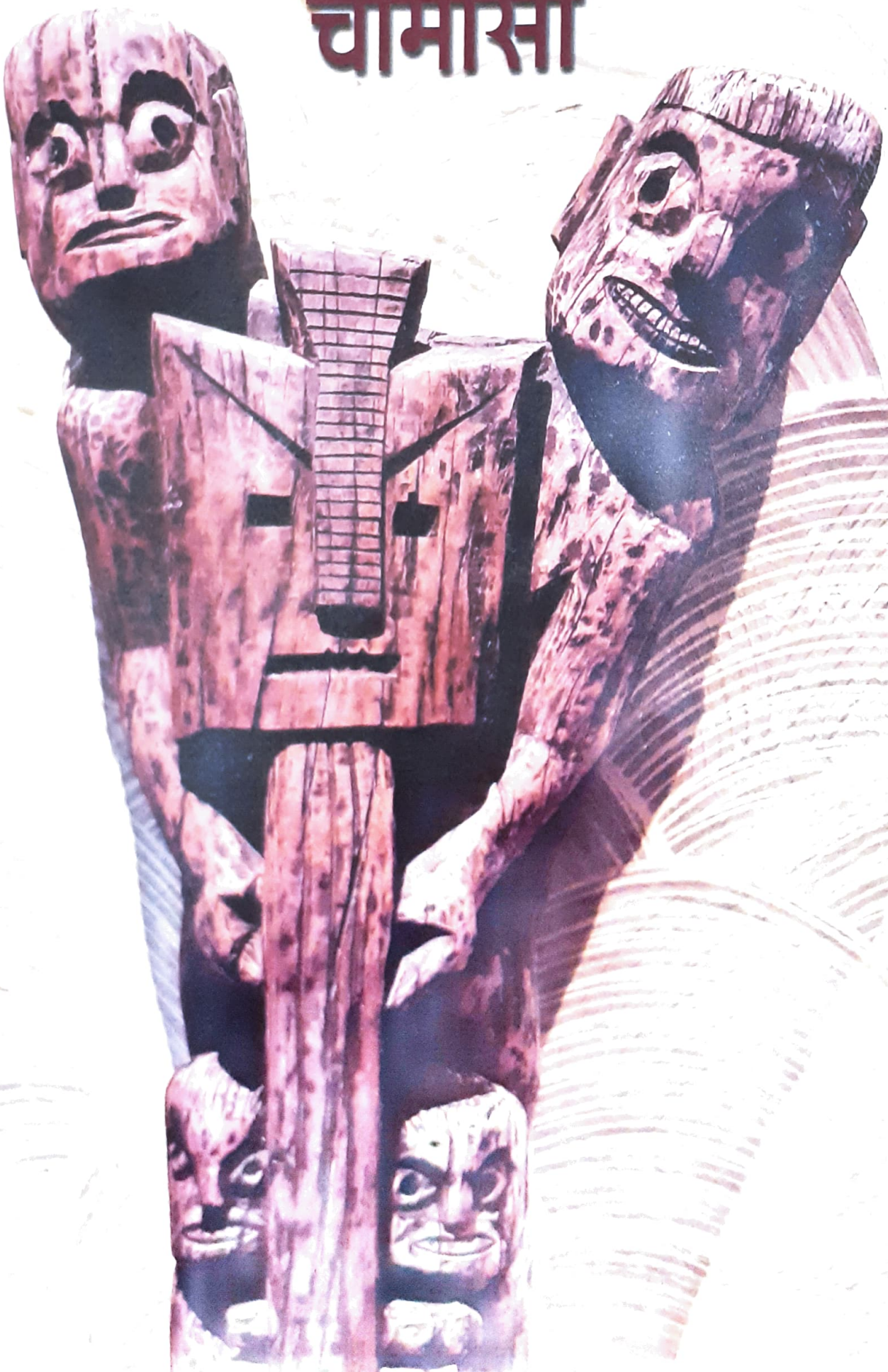

चौमासा

वर्ष-35, अंक 110
जुलाई-अक्टूबर, 2019

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रकाशन

ISSN 2249-5479
©स्वत्वाधिकार सुरक्षित

सम्पर्क

आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002

फोन/ फैक्स : 0755-2661948, 2661640

E-mail mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum13@gmail.com

web www.mptribalmuseum.com

मूल्य

एक प्रति बीस रुपये

वार्षिक सदस्यता पचास रुपये

आजीवन सदस्यता पन्द्रह सौ रुपये

चौमासा का वार्षिक शुल्क अनुषंग पुस्तिका के साथ सौ रुपये

प्रचार/प्रसार

प्रवीण गावण्डे (मो. 9827351093)

आवरण छायाचित्र राजेन्द्र जांगले, भोपाल

शब्दांकन

आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी

मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण

मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- चौमासा में प्रकाशित सामग्री लेखकों के अपने मत और विचार हैं। आवश्यक नहीं कि अकादमी उनसे सहमत हो।

- पत्रिका और प्रकाशन से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन क्षेत्राधिकार भोपाल रहेगा।

निदेशक, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल मुद्रक, प्रकाशक द्वारा मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल से मुद्रित कराकर आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल से प्रकाशित।

सम्पादक - अशोक मिश्र

इस अंक में

बुन्देली साहित्य और महात्मा गांधी / डॉ. बहादुर सिंह परमार / 5

लोक-संस्कृति में यक्ष पूजा / डॉ. आद्या प्रसाद द्विवेदी / 10

लौकिक परम्पराएँ एवं वेद / प्रो. रामराज उपाध्याय / 15

लोक और लोकप्रिय संस्कृति / धर्मवीर यादव / 18

हाथियों के हजार अजूबे / डॉ. महेन्द्र भानावत /21

लोक नृत्य एवं बदलता परिवेश / प्रो. शरीफ मोहम्मद / 30

बदलता ग्रामीण एवं नगरीय जीवन / डॉ. मीना साकल्ले / 39

लोकसंगीत और लोकवाद्य / डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव /45

जनजातीय और लोकचित्र परंपराएँ / डॉ. लक्ष्मीनारायण गुप्त /48

बस्तर की घोटुल परम्परा / रजनी शर्मा / 57

हिमाचल प्रदेश की वेशभूषा / पवन चौहान /61

राजस्थानी लोकसंगीत / डॉ. शशिकला राय / 65

जनजातियों का स्वरूप / डॉ. मुन्ना शाह / 70

मौखिकी का प्रमुख आधार / डॉ. शक्ति प्रसाद द्विवेदी / 76

बज्जिका लोक गीत / ऊषा श्रीवास्तव /79

लोकगीतों में मेहंदी / डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'/ 89

सोलह संस्कारों में हल्दी / डॉ. सुमन चौरे / 97

छत्तीसगढ़ में गोदना परम्परा / डॉ. सरिता साहू/ डॉ. किशोर अग्रवाल /104

छत्तीसगढ़ में होली पर्व / डॉ. भुवाल सिंह ठाकुर / 108

छत्तीसगढ़ में भूमि अलंकरण / राम कुमार वर्मा / 114

गुदना कला / सुधा तैलंग / 119

लोकमाता भैंसवादेवी / डॉ. अंशुबाला मिश्रा / 122

मीराबाई की भक्ति / ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल /125

सह-अस्तित्त्व का आख्यान / पुनीता जैन / 131

बहुरूपिया / संदीप शर्मा / 141

लोकदेव भीलट / डॉ.देवेन्द्र पाठक / 146

लौकिक परम्पराएँ एवं वेद

प्रो. रामराज उपाध्याय

'वेदो अखिलो धर्ममूलम्' कहते हुये बताया गया है कि धर्म का मूल वेद है। धर्म क्या है? इसका सबसे सरल उत्तर है, जिसे हम धारण करते हैं। अर्थात् जीवन की वह शैली जिसे हम धारण कर अपना सम्पूर्ण जीवन जीना चाहते हैं, सामान्य दृष्टि से वह धर्म है। लोक में विविध प्रकार की धारणाओं को हम लोग देखते हैं और उनका पालन भी करते हैं। हमें यह विचार करना चाहिये कि जिन धारणाओं एवं मान्यताओं को लेकर हम जी रहे हैं, उनका स्रोत क्या है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के क्रम में जब हम आगे बढ़ते हैं तो पाते हैं कि इनमें से अधिकांशत: मान्यताएँ वैदिक मान्यताएँ हैं।

उदाहरण स्वरूप लोक में देखा जाता है कि किसी विशेष धार्मिक उत्सव का आयोजन नदी के तट पर करने की एक परम्परा है। इस परम्परा के मूल में विचार करने पर पता चलता है कि इसका कारण जल है। जल को वेद ने इस प्रकार की मान्यता प्रदान की है कि उसको हमने लौकिक परम्पराओं में स्थान दे दिया है। जल के बारे में वेद का एक मन्त्र यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा, जो इस प्रकार है-

सुमित्रिया न आप ओषधय: सन्तु
दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु यो अस्मान्द्वेष्टि यं च व्वयं द्विष्म:।।

यह मन्त्र शुक्ल यजुर्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र है। पौरोहित्यिक प्रविधियों के परिपालन में इसका प्रयोग अनेकश: सुना जाता है। यह मन्त्र जल को देवता के रूप में मानते हुये कहता है कि हे जल! आप हमारे लिये एवं हमारे सभी सुमित्र जनों के लिये औषधि स्वरूप

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका

(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

उद्धव चरित्रांक

₹50/-

बर 2019 | वर्ष 07 | अंक 02

दर्शन-अध्यात्म

सांस्कृतिक सन्दर्भ पर आधृत

(उत्तराखण्ड)

51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

र्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

जुलाई–दिसम्बर
2019 ई.
विक्रम सम्वत् 2076

07 अंक : 02

संरक्षक :
. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
माध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
देवी प्रसाद त्रिपाठी (हरिद्वार)
वाचस्पति मिश्र (लखनऊ)
हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक

मोबा. 9456328499
: shiv...ishra74@gmail.com

**

शो... मण्डल
जे... (पौड़ी)
रा... द्विवेदी (दिल्ली)
दि... कुमार गर्ग (वाराणसी)
रा... सिंह (देहरादून)
रा... खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
डा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
फोन नं.: 01334-260251
-मेल : jairamsandesh@gmail.com

मी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
राम आश्रम भीमगोडा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डा. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

परमपवित्र उद्धवचरित्र .... ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी 1

नन्दनन्दन कृष्ण के नित्यसहचर–उद्धव .... प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र 3

प्रभु श्रीकृष्ण के प्रिय सखा ज्ञान निपुण उद्धव जी .... जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज 7

भगवान् के अर्चाविग्रह उद्धव .... प्रो० रामसलाही द्विवेदी 9

ज्ञान, भक्ति रसावतार श्रीउद्धवजी का चरित्र .... डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल 12

उद्धव शरणागति मीमांसा .... डॉ० अनिलानन्द 16

भगवदुद्धव संवाद में वेदार्थोपबृंहण .... डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा 19

परम भागवत श्री उद्धव जी .... प्रो० रामराज उपाध्याय 22

उद्धवगीता–भगवद्गीता में भगवत्स्वरूप .... डॉ० देवानन्द शुक्ल/डॉ० प्रीति शुक्ला 24

परम भागवत उद्धव .... वैद्य तनसुखराम शर्मा 27

श्रीमद्भागवत में उद्धवचरित्र .... प्रो० मिनति रथ 31

श्रीकृष्ण सुहृदुद्धव .... डॉ० दिनेश कुमार गर्ग 35

महात्मा सूरदास की काव्यचेतना में "उद्धव" .... प्रो० शिवशङ्कर मिश्र 38

उद्धव चरित्र–एक सामान्य अध्ययन .... डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट) 41

श्रीकृष्ण के उद्धव .... डॉ० सुनीता कुमारी 43

श्रीकृष्ण के सखा उद्धव .... डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली 46

उद्धव की व्रजयात्रा .... डॉ० विजय कुमार पाण्डेय 48

श्री उद्धवजी गोपांगनाओं के हितैषी .... डॉ० रामकिशोर मिश्र 50

भक्तशिरोमणि उद्धव .... डॉ० आशुतोष गुप्त 51

श्रीमद्भागवतोक्त उद्धवचरित्र .... डॉ० अरुणिमा 56

उद्धव की दृष्टि में मैया यशोदा, गोपियाँ .... डॉ० रीतेश कुमार पाण्डेय 60

ज्ञानी उद्धव और गोपियाँ .... श्वेता 63

पौराणिक साहित्य में उद्धव .... डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल 66

श्रीमद्भागवत में उद्धव–गोपी संवाद .... योगेश कुमार मिश्र 68

योगीश्वर श्रीकृष्ण के परममित्र उद्धव .... विजय गुप्ता 70

उद्धव जी का विभिन्न दृष्टियों से मूल्यांकन .... डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 73

उद्धव शतक : एक अध्ययन .... डॉ० धनजय शर्मा 76

उद्धव एक महान साधक .... डॉ० कृपाशंकर मिश्र/मुदित पाण्डेय 81

श्रीमद्भागवत पुराण में उद्धव जी .... निराली 83

उद्धव .... वन्दना तिवारी 86

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध : jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

परम भागवत श्री उद्धव जी का मन सम्बन्धी ज्ञान एवं विज्ञान

प्रो० रामराज उपाध्याय
अध्यक्ष-पौरोहित्य विभाग
श्रीला.ब.शा.रा.सं.वि., नई दिल्ली

भारतीय संस्कृति अहंकार चतुष्टय के रूप में मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार तत्त्व का निरूपण करती है। मानव जीवन में इन चारों तत्त्वों का विशिष्ट महत्त्व बतलाया गया है। **संकल्पविकल्पात्मको मनः** कहते हुये मन के लक्षण में बतलाया गया है कि मन संकल्प एवं विकल्पात्मक होता है। **तन्मे मनः** शिवसंकल्पमस्तु इस वैदिक मन्त्र में यह प्रार्थना की गयी है कि मेरा मन शिवसंकल्प वाला होवे। इसी क्रम में उद्धव जी को भी मन के साधक के रूप में देखा जाता है।

श्रीमद्भागवतमहापुराण के उद्धव-गोपी संवाद में उद्धव जी का मन सम्बन्धी ज्ञान एवं विज्ञान स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उद्धव जी गोपियों के सम्मुख मनोदर्शन प्रस्तुत करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि वियोगावस्था में मनोदर्शन कल्याणकारी है और संयोगावस्था में चाक्षुषदर्शन। गोपियों का कहना है कि जो चाक्षुषदर्शन कर चुके हैं उनके उपर मनोदर्शन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिस प्रकार काले रंग के ऊपर कोई अन्य रंग नहीं चढ़ता।

उद्धव जी गोपियों के वियोगजनित दुःख का कारण मन को मानते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण को भी यही समझाने का प्रयास करते हैं कि दुःख का कारण मन है। भगवान् ने कहा कि उद्धव जी यही बात आप गोकुलवासियों को समझाकर आ जाइये। उद्धव जी ने कहा कि यह कौन सी बड़ी बात है, मैं अभी जाकर इसे सम्पन्न करता हूँ। उद्धव जी व्रज में पधारते हैं, मैया यशोदा एवं नन्द जी को समझाते हुये गोपियों को समझाते हैं और कहते हैं कि तुम लोगों का मन कृष्ण में लग गया है, इसलिये कष्ट हो रहा है। अब इस मन को तुम लोग निर्गुण ब्रह्म में लगा दो। गोपियाँ कहती हैं कहाँ से लगा दें? **एक हुतो सो गयो श्याम संग को अवराधे ईश।** एक मन था वह श्याम के साथ चला गया, अब कहाँ से मन लाकर लगा दें। उद्धवजी आश्चर्यचकित हो गये, कहा-क्या मतलब? गोपियों ने कहा- मतलब साफ है, **उधो मन ना भयो दस बीस।** हमारे पास मन एक ही था, उस मन को हमने श्रीकृष्ण में लगा दिया। अब आप कह रहे हैं कि उस मन को दूसरी ओर लगा दो तो यह तो सम्भव ही नहीं है। यह सम्भव तब हो सकता है, जब आपके पास मन एक से अधिक हो।

शास्त्र भी इसी बात की ओर संकेत करते हैं कि-**मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः** अर्थात् मन बन्धन एवं मोक्ष का कारण है। कैसे? लगाव के कारण। मन यदि पुण्यकर्मों में लग गया तो मोक्ष का कारण हो जायेगा और यदि पाप कर्मों में लग गया तो बन्धन का कारण हो जायेगा। यहाँ भी मन एकवचन के रूप में उपस्थित है। एवकार यहाँ पर निश्चय को प्रस्तुत करता है, दृढ़ता दिखलाता है क्योंकि दो या दो से अधिक मन की कोई स्थिति नहीं बनती दिख रही है। श्रीमद्भागवतमहापुराण के सैंतालिसवें अध्याय के बारह से इक्कीस तक के श्लोक भ्रमरगीत के नाम से जाने जाते हैं। भ्रमरगीत में राधा जी भ्रमर को उलाहना देती हैं, किन्तु उनका लक्ष्य उद्धव जी हैं। भ्रमरगीत एकवचन में है और वेणुगीत, युगलगीत, आदि बहुवचन में हैं।

उद्धव जी गोपियों को यह बताना चाहते हैं कि मन

RNI-UTTHIN/2013/51284

ISSN-0975-8739

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत मूल्यांकित शोध पत्रिका

(पत्रिका क्रमाङ्क - 41041)

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

जम्बूद्वीप (एशिया) की पौराणिक पर्वतीय.....प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र.....1

प्रकृति ही पर्वत और पर्वत ही प्रकृति है.....जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज..5

हम और हमारे पर्वत.....डॉ० बद्रीप्रसाद पंचोली.....8

संस्कृत साहित्य में हिमालय वर्णन.....डॉ० भवानीदत्त काण्डपाल.....10

दिव्यधाम चित्रकूट.....प्रो० रामसलाही द्विवेदी.....12

ध्यान हेतु सर्वोत्तम स्थल हैं पर्वत.....प्रो० रामराज उपाध्याय.....16

पर्वत : कथ्य एवं तथ्य..... .....डॉ० सुनीता कुमारी.....18

वैदिक वाङ्मय में पर्वतों का वैशिष्ट्य.....डॉ० गोपाल प्रसाद शर्मा.....22

'हिमालय' का प्राकृतिक एवं .....डॉ० बैकुण्ठ नाथ शुक्ल/डॉ० विक्रान्त उपाध्याय.....27

गोवर्धन पर्वत परिक्रमा के मध्य.....डॉ० अनिलानन्द.....32

पर्वत.....वैद्य पं० तनसुखराम शर्मा.....39

महाकवि कलिदास की कृतियों में.....प्रो० किशनाराम बिश्नोई/दीपक.....43

मेघदूत के पर्वत–प्रसङ्ग.....डॉ० रामविनय सिंह.....47

संस्कृत वाङ्मय में पर्वत वर्णन.....डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट).....50

वनपर्व में पर्वत.....डॉ० आशुतोष गुप्त.....53

प्रकृति पोषक पर्वत.....डॉ० कृष्ण गोपाल दीक्षित 'दद्दा जी'.....58

कामदगिरि हैं पादसेवन भक्ति के अनुपम.....प्रो० रामबहादुर शुक्ल.....61

कालिदास साहित्य में वर्णित..... डॉ० अरुणिमा.....66

पौराणिक भूगोल में भारतीय पर्वत.....प्रो० मिनति रथ.....68

वाल्मीकि का पर्वत प्रेम.....डॉ० शालिमा तबस्सुम.....70

हिमालय का सामाजिक एवं सांस्कृतिक .....डॉ0 धनञ्जय शर्मा.....77

द्रोणगिरि पर्वत..... डॉ० मनोज कुमार जोशी.....82

पर्वतीय संस्कृति उत्तराखण्ड .....श्रीमती गंगा गुप्ता/डॉ0 आशुतोष गुप्त.....84

जैनदर्शन में पर्वतीय सन्दर्भ : तत्त्वार्थसूत्र..... विजय गुप्ता.....88

उत्तराखण्ड गढ़वाल की पर्वतीय श्रृंखलाएँ.....डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट 91

हिमाद्रि वैभव.....डॉ० विजय लक्ष्मी.....96

धार्मिक दृष्टि से पर्वतों की महिमा..... डॉ० तारादत्त अवस्थी 99

भारतीय संस्कृति एवं पर्वत.....निराली.....101

पर्वतों के वैदिक सन्दर्भ : एक विवेचन.....पवन.....103

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrik

❐ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

❐ किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।

ध्यान हेतु सर्वोत्तम स्थल हैं पर्वत

प्रो० रामराज उपाध्याय
अध्यक्ष पौरोहित्य विभाग एवं
निदेशक पौरोहित्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम
श्री ला० ब० शा० रा० सं० विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

वसेत् पर्वतभूतेषु प्रौढो या ध्यानधारणात्।
सारात्सारं विजानाति पर्वतः परिकीर्तितः॥

प्राणतोषिणी ग्रन्थ के अवधूत प्रकरण के अनुसार पर्वत मूल या पर्वत पर बैठकर ध्यान धारणा इत्यादि अष्टाङ्ग योगों का उपक्रम साधक को सारगर्भित ज्ञान प्रदान करता है। पर्व पूरणे पर्वति पुरातीति इत्यादि स्रोतो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पर्वत व्यक्ति को पूर्ण करते है। विशेषकर साधना तपस्या के सन्दर्भ में तो यह देखा गया है कि पर्वतों पर की गयी तपस्यायें व साधनायें अधिकांशतः पूर्ण हुयी हैं। पर्वत को महीध्र, शिखरी, आभृत, अहार्य, धर, अद्रि, गोत्र, गिरि, ग्रावा, अचल, शैल, शिलोच्चय इत्यादि नामों से अमरकोषकार ने वर्णित किया है। शब्दरत्नावली में स्थावर, सानुभान्, पृथुखेखर, धरणीकीलक, कट्टार, जीमूत, धातुभृत्, भूधर, शिखर, स्थिरः, कुटीर, कटकी श्रृङ्गी, निर्झरी, अगः, बुधर, धराधर, प्रस्थवान्, वृक्षवान् कहा गया है।

पर्वतों का वर्गीकरण करने के लिये सुमेरु पर्वत को पर्वतों का मध्य मानते हुये 4 प्रकार से विभाजित किया गया है। सुमेरु के पूर्व में आने वाले पर्वत, शीतान्त, चक्रमुञ्ज, कुलीर, अश्वत्थ, फङ्कवान्, मणिशैल, वृषवान्, महानील, भवाचल, सुविन्दु, मन्दर, वेणु, सुमेष, निमिष और देवशैल हैं। सुमेरु के दक्षिण के पर्वतों में त्रिकूट, शिखराद्रि, कलिङ्ग, पतङ्गक, रुचक, सानुमान, ताम्रक, विशाखवान्, श्वेतोदर, समल, वसुधार, रत्नवान्, एकशृङ्ग, महाशैल, गजशैल, पिशाचक, पञ्चशैल, कैलास और हिमवान प्रमुख हैं। सुमेरु पर्वत के पश्चिम में सुरक्षु, शिशिर, वैदूर्य, पिङ्गल, पिञ्जर ... कपिल, मधु, अञ्जन, कुक्कुट, कृष्ण, पाण्डुर, सहस्रशिखर, पारियात्र एवं शृङ्गवान् हैं। सुमेरु के उत्तर में शङ्खकूट, वृषभ, हंसनाभ, अचल, कपिलेन्द्र, सानुमान, नील ... स्वर्णशृङ्ग, शृङ्गाक, ... विराज, ... रुचिर है।

इसके अलावा सात कुल पर्वतों के वर्णन में मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य एवं पारियात्र नाम आता है। श्रेष्ठ पर्वतों में हिमवान, हेमकूट, निषध, नीलपर्वत, श्वेत, शृङ्गवान्, मेरु, माल्यवान, गन्धमादन, मलय, सह्य, भुक्तिमान, ऋक्षवान्, विन्ध्य, पारियात्र, कैलास, मन्दर इत्यादि है। पर्वतों को जातकस्या कहते हुए बतलाया गया कि पहले पर्वत अपने पंखो से उड़ा करते थे। बाद में मैनाक पर्वत को छोड़कर सभी पर्वतों के पंख काट दिये गये। मैनाक पर्वत का वर्णन करते हुये गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि सागर ने उनको आदेश दिया-तैं मैनाक होहिं श्रमहारी। अर्थात् हे मैनाक! आप हनुमान जी के श्रम का हरण कीजिये। मैनाक हनुमान जी के रास्ते में प्रकट हुये। हनुमान जी ने कहा समुद्र के बीच में यह पर्वत? मैनाक ने कहा कि अपने श्रम को हमारे ऊपर विश्राम करके कम कर लीजिये। श्री हनुमान जी ने कहा कि राम काज कीन्हें बिना मोंहि कहाँ विश्राम। इसका तात्पर्य है कि पर्वत श्रमहारी होते हैं। किसी भी प्रकार का श्रम पर्वत के स्पर्श से समाप्त हो जाता है।

जनवरी - जून 2020 | ISSN-0975-87..

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग विशेषांक

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

जून 2021 वर्ष 09 अंक 01

13/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक ISSN-0975-8738

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
r Reviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2021 ई.
विक्रम सम्वत् 2078

: 09 अंक : 01

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल

प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल

प्रो० जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
प्रो० राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
डॉ० रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
डॉ० दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
डॉ० रामविनय सिंह (देहरादून)
डॉ० रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
भीमगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा भार्गव प्रिंटर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं श्रीजयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित सम्पादक : डॉ. शिवशंकर मिश्र

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

शिवतत्त्व का महत्त्व एवं उसकी वैश्विकता ..... प्रो० अमिराज राजेन्द्र मिश्र 1
ज्योतिर्लिङ्ग का वैदिक स्वरूप ..... प्रो० रामानुज उपाध्याय 5
ज्योतिर्लिङ्गों में शिवतत्त्व ..... प्रो० छायारानी 7
शिवमहापुराण में द्वादश ज्योतिर्लिंग ..... प्रो० मिनति रथ 13
सोमनाथ मन्दिर ..... डॉ0 मार्कण्डेय नाथ तिवारी 17
मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग का पौराणिक ..... डॉ0 द्वारिका प्रसाद नौटियाल 20
उज्जयिन्यां महाकाल: ..... देवानन्द शुक्ल /प्रीति शुक्ला 23
अद्भुत ज्योतिर्लिंग है ओंकारेश्वर ..... प्रो० रामराज उपाध्याय 26
ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग : अमरेश्वर महादेव ... डॉ0 रज्जन कुमार 28
वैद्यनाथ–धाम : मनोकामना ज्योतिर्लिंग ..... डॉ० सुनीता कुमारी 31
वैद्यनाथ मंदिर का ऐतिहासिक ..... डॉ0 धनंजय शर्मा 34
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में भीमाशंकर ..... अंकित मनोड़ी 38
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में रामेश्वरम् ..... डॉ० आशुतोष गुप्त /तनुजा 41
नागेशं दारुकावने ..... डॉ० कीर्तिवल्लभ शक्टा 46
नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव तथा ..... डॉ० विनोद कुमार उनियाल 47
काशी–विश्वनाथ ..... प्रो0 कमला चौहान/अंजली 50
नाथयोग में भगवान् विश्वनाथ ..... महाबीर शुक्ल 57
ज्योतिर्लिंगों में महिमा विश्वनाथ ..... डॉ० अनिलानन्द 60
लिंगोत्पत्ति और उनके स्वरूप ..... जगद्गुरु स्वामी विदेह जी महाराज 62
हिमालये तु केदारम् ..... डॉ0 लज्जा पन्त (भट्ट) 65
धार्मिक यात्रा का एक प्रमुख केन्द्र ..... प्रो० पुष्पा अवस्थी/ मनोज जोशी 69
ज्योतिर्लिंग केदारनाथ ..... नन्दिनी कोटियाल/ प्रो० कमला चौहान ... 74
उत्तराखण्डस्थ पञ्चकेदार ..... डॉ० आशुतोष गुप्त/राजमोहन 78
ज्योतिर्लिङ्गों में पशुपतिनाथ ..... डॉ० तारादत्त अवस्थी 92
शिवसूचना का वैश्विक स्रोत ..... डॉ० राजेश कुमारी मिश्र 96
द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों के स्वामी शिव ..... विजय गुप्ता 99
पुराणों में ज्यातिर्लिङ्ग की उत्पत्ति ..... डॉ० व्रजेन्द्र कुमार सिंहदेव 103
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❑ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❑ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❑ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

अद्भुत ज्योतिर्लिंग है 'ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग'

प्रो० रामराज उपा
अध्यक्ष-पौरोहित्य वि
श्री ला.ब.श.र.सं.वि.
नई दिल्ली-16

देवस्थानसमं ह्येतत् मत् प्रसादात् भविष्यति।
अन्नदानं तपः पूजा तथा प्राणविसर्जनम्।
ये कुर्वन्ति नरास्तेषां शिवलोकनिवासनम्॥

स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड के बाईसवें अध्याय के इस श्लोक के अनुसार ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग देव स्थान के समान अलौकिक स्थान है। यहाँ अन्न दान, तप, पूजा एवं अंतकाल में शरीर त्याग इत्यादि कर्मों का फल शिव लोक का निवास बतलाया गया है। 'शिवस्तु कल्याणकारकः' के अनुसार शिव का अर्थ कल्याण है। प्रायशः शिवलोक का अर्थ केवल मरणोत्तर किसी लोक को समझते हैं, परन्तु जीवन में जो शिवलोक है वह कल्याण लोक है। प्रत्येक जीवित व्यक्ति कल्याण चाहता है इसलिए उसके जीवन में ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग का महत्त्व है।

ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग मालवा प्रान्त में नर्मदा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ नर्मदा नदी की दो धाराओं के बीच एक टापू जैसा हो गया है जिसे मान्धाता पर्वत या शिवपुरी कहा जाता है। एक धारा पर्वत के उत्तर की ओर बहती है और दूसरी दक्षिण की ओर। दक्षिण की ओर बहने वाली धारा ही प्रधान धारा है जिसे नाव द्वारा पार करते हैं। नाव से पार करते समय दोनों किनारों का दृश्य अत्यंत मनोरम दिखता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा मान्धाता ने जिनके पुत्र अम्बरीष और मुचुकुन्द दोनों प्रसिद्ध भगवद् भक्त थे, उन्होंने इस स्थान पर घोर तपस्या करके भगवान् शंकर को प्रसन्न किया था। इसीलिए इस पर्वत का नाम मान्धाता पर्वत पड़ गया है। इस पर्वत के अधिकांशतः मन्दिरों का निर्माण पेशवाओं के द्वारा करवाये गये हैं। ओंकारेश्वर मन्दिर का निर्मा इन्हीं का बनवाया हुआ है। इसमें दो कोठरियों में से जाया जाता है। भीतर में अँधेरा रहने के कारण बराबर जलता रहता है।

'उज्जयिन्यां महाकालम् ओङ्कारममलेश्वरम् अनुसार ओंकारेश्वर की जहाँ बात आती है वहाँ अमले का भी नाम लिया जाता है परन्तु इन दोनों का अलग-अलग है और अस्तित्व भी अलग-अलग है। सम्बन्ध में कथा कहती है कि एक बार विन्ध्यपर्वत पार्थिवार्चन सहित ओंकारनाथजी की छः मास तक तप की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान् शंकर ने दर्शन दे मनोवांछित वर प्रदान किया। उसी समय वहाँ देवता ऋषिगण पधारे, जिनके प्रार्थना पर ओंकार नामक लिंग दो भाग हो गये। इनमें से एक लिंग में भगवान् शिव प्र के रूप में विराजने लगे जिससे उसका नाम ओंकारेश्वर गया और पार्थिवलिंग में जो शिव जी पधारे उसका अमरेश्वर या अमलेश्वर हो गया। ओंकारेश्वर शिव गढ़ा हुआ शिवलिंग नहीं है यह एक प्राकृतिक शिवलिंग है इसमें चारों ओर जल भरा रहता है। इस लिंग की विशेष यह है कि यह गुम्बज के नीचे नहीं है, इसके शिखर महाकालेश्वर की मूर्त्ति विराजित है। महाकालेश्वर के मन्दि में भी ऊपर में ओंकारेश्वर की मूर्ति है। स्थानीय मान्य के अनुसार इस पर्वत को ही ओंकार मानकर लोग परिक्र करते हैं। इस पर्वत पर और भी कई मन्दिर हैं उनक परिक्रमा भी इस पर्वत के परिक्रमा से हो जाती है मान्धाता टापू में ओंकारेश्वर की दो परिक्रमायें होती है

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

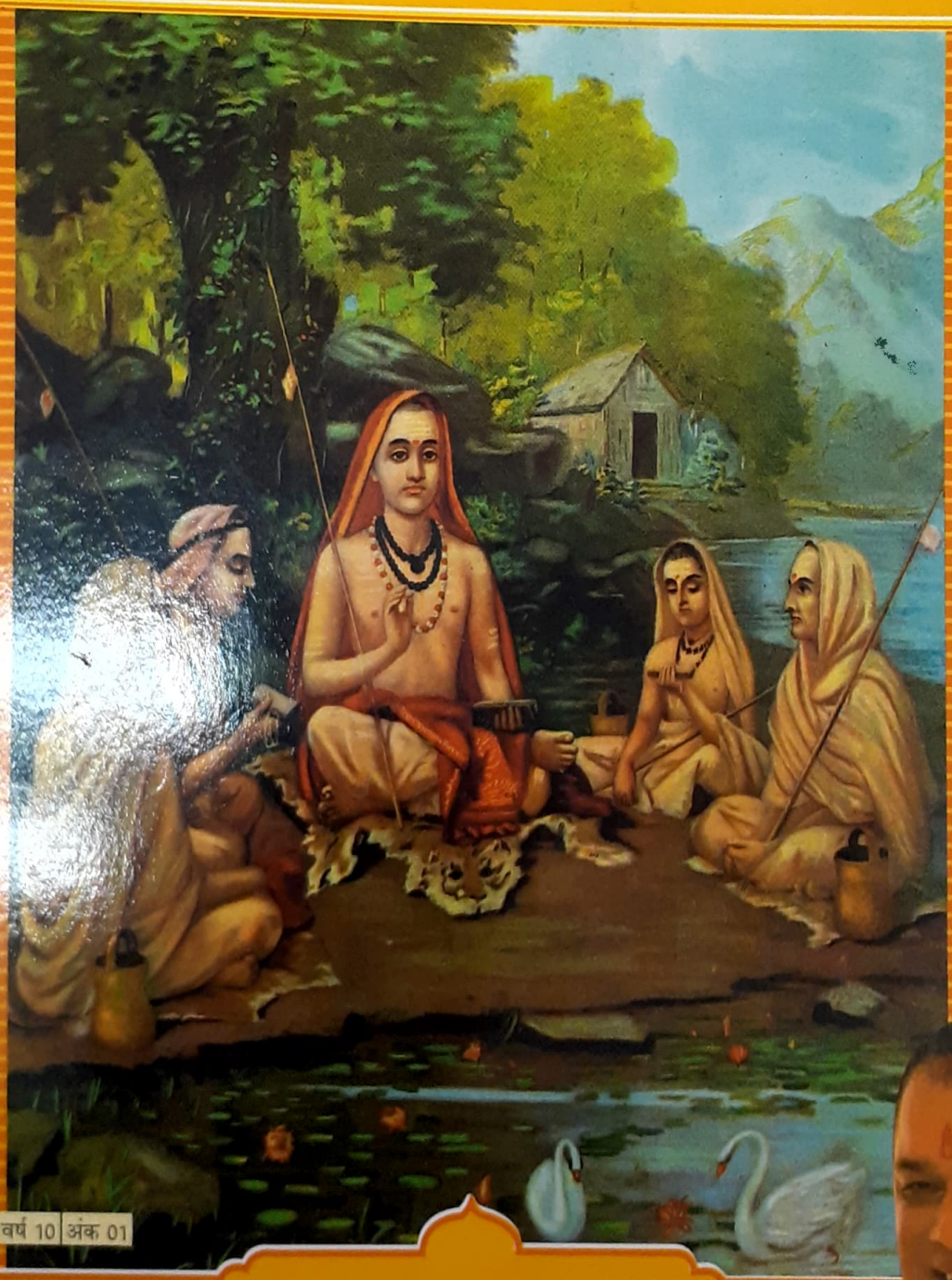

शङ्कराचार्य विशेषाङ्क

जून 2022 | वर्ष 10 | अंक 01

₹ 50/-

घर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

जयराम संदेश
Jairam Sandesh
...र्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
...eviewed, Refereed Research Journal

जनवरी–जून
2022 ई.
विक्रम सम्वत् 2079

...: 10 अंक : 01

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
...रमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

परामर्शदातृ मण्डल
...ो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
...ो० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
...ो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
...ो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
...ो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

सम्पादक
डॉ. [illegible]

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
... जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
... राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
... रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
... दिनेश कुमार शर्मा (वाराणसी)
... रामविनय सिंह (देहरादून)
...ो० राधारमण खण्डेलवाल (हरिद्वार)

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

प्रकाशक
श्री जयराम आश्रम
...भगोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा ... प्रिंटर्स, निकट सप्तऋषि पुल, भूपतवाला हरिद्वार, उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं जयराम आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डॉ. [illegible]

अनुक्रम

आशीर्वचन

सम्पादकीय

शांकर वेदान्त : एक विमर्श	डॉ० सुनीता कुमारी	1
भगवत्पाद शंकराचार्य	डॉ० बद्री प्रसाद पंचोली	7
शक्ति उपासना में श्री शङ्कराचार्य	प्रो० रामराज उपाध्याय	9
शिवभक्त आदिगुरु शङ्कराचार्य	डॉ० ललिता	12
आद्य शंकराचार्य जी का प्रेरणाप्रद	प्रो० गोपाल प्रसाद शर्मा	16
उपनिषदों में वर्णित नैतिक मूल्य	डॉ० आशुतोष गुप्त/बबली	21
आचार्य शङ्कर की प्रेरणा एवं प्रभाव	डॉ० अनिलानन्द	25
शांकरभाष्य के सन्दर्भ में	प्रो० कमला चौहान/अंजली	29
'भगवान् शङ्कराचार्य आविर्भूयात्	डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट)	35
सौन्दर्यलहरी में वर्णित त्रिपुरसुन्दरी	प्रो० रामबहादुर शुक्ल	38
जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित	डॉ० आशुतोष गुप्त/राजमोहन	47
आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित	डॉ० आरती बाली	54
आद्य श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य	वैद्य पं० तनसुख शर्मा	56
आचार्य शंकर का दार्शनिक चिन्तन	डॉ० अरुणिमा	63
आदिगुरु शंकराचार्य का जीवन दर्शन	डॉ० धनंजय शर्मा	66
उपनिषदों मे आत्मतत्त्व विवेचन	डॉ० आशुतोष गुप्त / तनुजा	71
आदिगुरु शङ्कराचार्य का अद्वैत वेदान्त	डॉ० कुसुम डोबरियाल/दीपक कुमार द्विवेदी	76
आचार्य शङ्कर का ब्रह्मसूत्र तथा	महावीर शुक्ल	82
सनातन धर्म एवं श्रीभगवत्पाद	अंकित सिंह यादव	88
भगवत्पाद आदि शंकराचार्य की केदार यात्रा	सतीश नौटियाल	95
सनातन संस्कृति के संरक्षण में आदिशङ्कर	पवन चन्द्र	98
वर्तमान समाज में आदिशंकराचार्य जी	शुभदीप घोष	102
अध्यात्म में अद्वैत	मुदित कुमार पाण्डेय	106

जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाइन उपलब्ध jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

शक्ति उपासना में श्री शङ्कराचार्य जी का मत

प्रो० रामराज उपाध्याय
आचार्य-पौराहित्य विभाग
श्री ला.ब.शा.रा.सं.वि.वि.,
नई दिल्ली

तन्त्रों को क्रान्त की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया गया है जिन्हें- विष्णुक्रान्त, रथक्रान्त और अश्वक्रान्त के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक विभाग में तन्त्र सम्मिलित हैं। तान्त्रिक पूजा शैव, शाक्त एवं वैष्णव इन तीन वर्गों में विभक्त है।

शक्ति उपासना में श्री शङ्कराचार्य जी की उपासना सर्वविदित है। सौन्दर्यलहरी जैसे अनेकों स्तोत्र ग्रन्थ इसके ज्वलन्त उदहारण हैं। त्रिक दर्शन- जीवन्मुक्ति को, प्रत्यभिज्ञा दर्शन- प्रत्यभिज्ञा को, पतञ्जलि- स्वरूपावस्थान को, सांख्य- कैवल्य को, नाथ योगी- पिण्डपदसमरसीकरण को, आचार्य लक्ष्मीधर- सायुज्य को एवं शङ्कराचार्य- अद्वैत भाव या धारणा को मुक्ति मानते हैं। धारणा के फल का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि आधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्धाख्यादि चक्रों में यथाक्रम मति-स्मृति-बुद्धि-प्रज्ञा-मेधा-प्रतिभा-संविद्रूप निष्पत्ति ही धारणा का फल है। भगवत्पाद ने धारणा से जीवन्मुक्ति प्राप्त होने की पुष्टि करते हुए कहा है- धारणा परिज्ञानान्मुक्तिः। सौन्दर्य लहरी में शङ्कराचार्य जी कहते हैं- **परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्**.....। अर्थात् भजन के दो भेद हैं- षट्चक्रात्मक एवं धारणात्मक भजन।

आधार स्वाधिष्ठान तामिस्र लोक है, इसलिए उपास्य नहीं है। मणिपूर प्रभृति सहस्त्र कमल पर्यन्त 5 चक्र पूज्य हैं। मणिपूर चक्र की उपासना सार्ष्टि रूपा मुक्ति है "सार्ष्टि नाम देव्याः पुरः समीपे पुरान्तरं निर्माय सेवां कुर्वाणस्य अवस्थितिः"। संवित्कमल पूजा सालोक्य मुक्ति है "सालोक्यं नाम देव्याः पट्टने निवासः"। विशुद्धि चक्र की उपासना सामीप्य मुक्ति है "सामीप्यं नाम अङ्गसेवत्वम्"। आज्ञाचक्र की उपासना सारूप्य मुक्ति है "सारूप्यं नाम समानरूपत्वम्"।

भारतीय दर्शनों में तीन प्रकार की जिज्ञासायें देखने को मिलती हैं- अथातो ब्रह्म जिज्ञासा का वर्णन भगवान् बादरायण ने वेदान्त सूत्र में किया है। अथातो धर्म

जनवरी-जून 2022 | ISSN-0975-8739

RNI-UTTHIN/2013/51284

हिन्दी अर्द्धवार्षिक

ISSN-0975-8739

जयराम संदेश
Jairam Sandesh

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत विशेषज्ञ समिति द्वारा मूल्यांकित शोध-पत्रिका

A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

सप्तर्षि विशेषांक

दिसम्बर 2022 वर्ष 10 अंक 02

₹ 50/-

धर्म-दर्शन-अध्यात्म एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

हिन्दी अर्द्धवार्षिक
ISSN-0975-8739
जयराम संदेश
Jairam Sandesh
...एवं सांस्कृतिक संदर्भ पर आधृत
A Peer Reviewed, Refereed Research Journal

जुलाई–दिसम्बर
2022 ई.
विक्रम सम्वत् 2079

अंक : 02
वर्ष : 10

संरक्षक :
प. पू. ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी
परमाध्यक्ष : जयराम संस्थाएँ

**

परामर्शदातृ मण्डल
प्रो० वशिष्ठ त्रिपाठी (वाराणसी)
डॉ० रामभद्रदास श्रीवैष्णव (प्रयाग)
प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय (दिल्ली)
प्रो० हरेराम त्रिपाठी (दिल्ली)
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)

**

सम्पादक
डॉ. शिवशङ्कर मिश्र
मोबाइल नं. 9456328499
ई-मेल : shivshankarmishra74@gmail.com

**

शोधपत्र परीक्षक मण्डल
...o जे.के. गोदियाल (पौड़ी)
...o राम बहादुर शुक्ल (जम्मू)
...o रामनारायण द्विवेदी (दिल्ली)
...o दिनेश कुमार गर्ग (वाराणसी)
...o रामविनय सिंह (देहरादून)
...o रामरतन खण्डेलवाल (हरिद्वार)

**

प्रूफ संशोधक
मनमुदित नारायण शुक्ल

**

प्रकाशक :
श्री जयराम आश्रम
...गोड़ा, हरिद्वार – 249401 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल नं. 01334-260251
ई-मेल : jairamsandesh@gmail.com

मुद्रक, प्रकाशक ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी द्वारा
...टर्स, निकट ललतारौ पुल, जनपद-हरिद्वार,
उत्तराखण्ड से मुद्रित एवं
...आश्रम भीमगोड़ा, जनपद हरिद्वार से प्रकाशित
सम्पादक : डा. शिवशंकर मिश्र

ॐ

वशिष्ठः काश्यपोऽथात्रिर्जमदग्निस्सगौतमः।
विश्वामित्रभरद्वाजौ सप्त सप्तर्षयोऽभवन्।।

अनुक्रम

आशीर्वचन
सम्पादकीय
सप्तर्षियों में अग्रगण्य महर्षि..................डॉ० विजय गुप्ता..................1
संस्कारों के प्रतिपादक महर्षि गौतम..................राम कुमार..................5
भारतीय संस्कृति के संवाहक..................डॉ० लज्जा पन्त (भट्ट)..................9
ऋषि वशिष्ठ : विशिष्ट ऋषि..................डॉ० संजीव प्रसाद भट्ट..................12
सुराष्ट्र कल्पना में योगाङ्गरूप..................महाबीर शुक्ल..................16
महर्षि वशिष्ठ एवं उनके द्वारा प्रदत्त..................तानिया डसगोत्रा..................24
योगवाशिष्ठोक्त सप्तभूमिका का..................अमितेश कुमार..................28
योगवेत्ता महर्षि वशिष्ठ प्रदत्त..................अंकित भट्ट/प्रो0 सुरेन्द्र कुमार..................32
सप्तर्षियों में भरद्वाज ऋषि : एक विमर्श..................डॉ० योगेश कुमार..................38
ऋषि भरद्वाज : श्रीरामचरितमानस..................मनमुदित नारायण शुक्ल..................40
संस्कृत वाङ्मय में वर्णित महर्षि..................अमन शर्मा..................44
विश्वामित्र के जीवन पर शाप एवं वरदान..................शोभा आर्या..................49
विश्वामित्र–नदी संवाद सूक्त का..................कु0 सपना..................54
सप्तर्षि कश्यप : एक अवलोकन..................डॉ० धनंजय शर्मा..................57
महर्षि जमदग्नि..................वैद्य पं० तनसुखराम शर्मा..................62
पुराणों में सप्तर्षि–विमर्श..................आचार्या मिनति रथ..................66
सप्तऋषि : अवधारणा एवं आस्था..................प्रो० रज्जन कुमार..................70
भारत देश को सप्तर्षियों का योगदान..................डॉ० गीता शुक्ला..................74
अत्रि ऋषि..................डॉ० तारादत्त अवस्थी..................77
वैदिक ऋषियों की महत्ता..................प्रो० रामराज उपाध्याय..................81
जयराम आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवाप्रकल्प

पत्रिका ऑनलाईन उपलब्ध - jairamashram.org/publication jairamsandeshpatrika

❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
❒ पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्याय क्षेत्र केवल हरिद्वार होगा।
❒ पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्श-परीक्षक मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।
❒ पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता के सम्बन्ध में सम्पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक का ही है, प्रकाशक और सम्पादक का नहीं।

वैदिक ऋषियों की महत्ता

प्रो० रामराज उपाध्याय
वरिष्ठ आचार्य एवं
पूर्वपौरोहित्य विभागाध्यक्ष
श्री ला. ब. शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

ऋषि शब्द ऋषि गतौ या दृशिर् प्रेक्षणे धातु से बनता है। वेद के मन्त्रों को अपनी तपस्या से प्राप्त करने या देखने के कारण मरीचि, अत्रि, अङ्गीरा, पुलस्त्य, पुलह, विश्वामित्र, भरद्वाज, गौतम, जमदग्नि आदि को ऋषि कहा जाता है। वैदिक साहित्य ऋषियों द्वारा दृष्ट या व्याख्यात होने के कारण अपौरुषेय कहा जाता है। वेद के अपौरुषेयवाद का ऋषित्व के सिद्धान्त से गहरा सम्बन्ध है। वेद मन्त्रों का व्यवहार ऋषि ज्ञानपूर्वक करने की बात करते हुए कहा गया है कि-

अविदित्वा ऋषिं छन्दो दैवतं योगमेव च।
योऽध्यापयेद् जपेद् वापि पापीयांजायते तु सः॥

मन्त्रों का अध्यापन एवं जप ऋषि, छन्द एवं देवता के ज्ञानपूर्वक होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो रहा है तो वह अध्यापन पाप यानी दोषयुक्त हो जायेगा। मन्त्राध्यापन या किसी भी अध्यापन को प्रयासपूर्वक दोषमुक्त रखा जाना चाहिए। उसी प्रकार मात्र जप के सम्बन्ध में भी यह कहा गया है कि मन्त्र का जप करने वाले को यह जानना चाहिए कि मन्त्र के ऋषि कौन है? मन्त्र का छन्द क्या है? और इसके देवता कौन है? यह जानकर किया गया मन्त्र का जप दोष मुक्त जप होता है जो साधक को सफलता दिलाता है। इसीलिए पौरोहित्य शास्त्र में किसी मन्त्र के अनुष्ठान में विनियोग के माध्यम से उस मन्त्र के ऋषि, छन्द और देवता का स्मरण किया जाता है ताकि अनुष्ठान भर उसे इनका भान होता रहे। एक जगह तो कहा गया है कि-

ऋषिच्छन्दो दैवतानि ब्राह्मणार्थं स्वराद्यपि।
अविदित्वा प्रयुंजानो मन्त्रकंटक उच्यते॥

अर्थात ऋषि, छन्द, देवता एवं स्वर आदि के ज्ञान के बिना प्रयुक्त मन्त्र की मन्त्रकंटक संज्ञा होती है। इसका मतलब जप की सफलता में कठिनाइयाँ हैं। इसलिए कुछ प्रसिद्ध वैदिक ऋषियों के बारे में इस प्रकार जाना जा सकता है।

मधुच्छन्दा- मधुच्छन्दा का नाम वेद मन्त्रों के पाठन पाठन में एवं मन्त्रों के प्रयोग में देखा जाता है। मधुच्छन्दा वैदिक ऋषि हैं इनको विश्वामित्र के सौ पुत्रों में मध्यस्थानीय ऋषि के रूप में जाना जाता है। ये ऋग्वेद के प्रारम्भिक सूक्तों के द्रष्टा ऋषि हैं। मधुच्छन्दा ऋषि के ऋचाओं एवं सूक्तों को ऋग्वेद संहिता के प्रारम्भ में स्थान मिला है। अग्नि एवं इन्द्र के प्रसङ्ग में मधुच्छन्दा ऋषि का अत्यन्त प्रभाव है। कुशिक गोत्र से सम्बन्धित मधुच्छन्दा ऋषि के जेता, अघमर्षण एवं धनन्जय ये तीन पुत्र थे। इनका सन्दर्भ ऐतरेय ब्राह्मण, कौशीतकि ब्राह्मण एवं ऐतरेय आरण्यक तथा ऋग्वेदानुक्रमणिका जैसे ग्रन्थों में प्राप्त होता है।

गृत्समद- ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल के मन्त्रों के द्रष्टा ऋषि के रूप में गृत्समद ऋषि का नाम आता है। ये आङ्गिरस गोत्रीय शुनहोत्र ऋषि के पुत्र माने जाते हैं। इनके सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि इनके पास स्वरूप परिवर्तन की कला थी इसलिए ये एकबार इन्द्र का स्वरूप बना लिए। ये इन्द्र के प्रशंसक ऋषि थे। असुरों का इन्द्र से द्वेष होने के कारण इनको इन्द्र जानकर असुरों ने बन्दी बना लिया। इन्होंने उस स्वरूप का त्याग करके अपना रूप परिवर्तन कर लिया जिससे ये भृगुवंशीय शुनक ऋषि के पुत्र हो गये, वहीं से दत्तक पुत्र कि प्रथा चल पड़ी। इनके लिए एकवचन का प्रयोग कम मिलता है। प्रायः गृत्समदाः शब्द का प्रयोग शास्त्रों में देखने को मिलता है। इस सन्दर्भ में यह मत प्राप्त होता है कि प्राचीनकाल में चौल्कर्म या अन्य संस्कारों को दत्तक पुत्र लेने वाला परिवार आयोजित करता था जिससे वह दत्तक पुत्र उस वंश या गोत्र का हो जाता था। इसके विपरीत जो केवल उपनयन संस्कार करके पुत्र को अपने परिवार में